जल पर दोहे

बिना जल के होय नहीं, कोई-सा भी काम।
इसे साफ रखने हेतु, उपाय करें तमाम।।

अगर मिले नहीं जल तो, जीवन है बेकार।
इसको बचाने के लिए, रहें आप तैयार ।।

बना हुआ है जल यहां, जीवन का आधार।
न हो जल के लिए रमेश, आपस में तकरार।।

कीजिए जल का 'रमेश', उतना ही उपयोग।
लगता जितना आपको, बिठा ऐसा संयोग।।

सच कहते हैं जल बना, जीवन की पहचान।
व्यर्थ बहाकर करें ना, इसका अब नुकसान।।

रखो बचाकर जल सदा, इसमें जीवन धार।
आपके जीवन की ये, खींचे है पतवार।।

जल प्रदूषण न बढ़े कभी, रखें इसका ध्यान।
अगर रोका नहीं इसे, खतरे में फिर जान।।

न हो प्रदूषित जल 'रमेश', रहे सदा ही साफ।
करें जो प्रदूषित जल को, करें ना उसे माफ।।

बचाकर रखें धन तभी, जब आवे संताप।
जल भी है धन सभी का, रखें बचाकर आप।।

जो अधर सदा रहे जी, प्यास से बदहाल।
प्यास बुझाकर मत कर, कोई नया सवाल।।

कुंआ, नदी, ताल, पोखर, छोड़ा सबने साथ।
कर दिया है पानी ने, हम सभी को अनाथ।।

कैसे बचे पानी अब, करें यह मंत्र याद।
ठान लें गर हर जन यह, करेंगे न बरबाद।।

जब था पानी खूब ही, जान सके ना मोल।
अब कर रहे हो 'रमेश', इस हेतु तुम किकोल।।

बन गया है जल संकट, सबके लिए विकराल।
हो गए हैं सब खाली, कुएं, नदी और ताल।।

पानी यदि बचाने का, करें हर जन प्रयास।
न तरसेंगे पानी को, रखिए यह विश्वास।।

मचा हुआ चहुँ ओर ही, पानी का संत्रास।
किया नहीं है इस हेतु, पहले से प्रयास।।

पानी अगर मिले नहीं, बचेगी नहीं जान।
इस हेतु होगा एक दिन, युद्ध बड़ा श्रीमान।।

देखो पानी का हुआ, कैसा यारों हाल।
हो रही त्राही-त्राही, मच रहा है बवाल।।

पर्यावरण पर दोहे

हरे पेड़ न हरें कभी, उनको सदा बचाय।
सच्चे हैं ये परम मित्र, इनको गले लगाय।।

देने लगे अगर यहां, हर आदमी ध्यान।
कटने न देंगे 'रमेश', पेड़ हरे श्रीमान।।

पेड़ कट गए सभी तो, भुगतोगे परिणाम।
पानी न बरसेगा तो, मचेगा कोहराम।।

ओढ़कर हरियाली ये, धरती करे श्रृंगार।
आवे पर्यावरण में, फिर सुनहरी बहार।।

करो न पेड़ पौधों से, आप कभी खिलवाड़।
अगर करोगे कर देंगे, सूखा ये आषाढ़।।

जिस दिन यह बात 'रमेश', करेंगे स्वीकार।
पेड़-पौधे हैं सबके, अच्छे रिश्तेदार।।

अपने आंगन में सभी, पेड़ लगाए 'रमेश'।
न रहे पर्यावरण का, दूषित फिर परिवेश।।

छायादार पेड़ों से, मिले सदा ही छांव।
बैठकर राहगीर के, जलेंगे नहीं पांव।।

बोले नहीं चुप रहते, फिर भी उनमें जान।
पेड़-पौधे देते हैं, हम सबको सम्मान।।

पेड़ करते नहीं कभी, कोई भी नुकसान।
मगर स्वार्थ के खातिर, काटे उसे इंसान।।

पेड़-पौधों से 'रमेश', करोगे छेड़-छाड़।
फिर पानी के लिए यहां, चलेगी मार-धाड़।।

संपर्क करें :
श्री रमेश मनोहरा
शीतला गली, जावरा, जिला - रतलाम - 457 226, मध्य प्रदेश